श्री चौबीस तीर्थंकर पूजा

रचयिता - राजेश कासलीवाल उज्जैन

स्थापना (दोहा)

ऋषभादि वीरान्त प्रभु, श्री चौबीस जिनेश ।
ज्ञाता हो तिहुँलोक के, नही राग नही द्वेष ॥
धर्मतीर्थ उपदेश कर, पहुँचे शिवपुर-थान ।
तिष्ठो मम उर-पद्म पर, यही विनय-आव्हान ॥

जल

ऐक्य रहा तन में चेतन का, अतएव निरंतर जग-नर्तन ।
प्रभु! सरस-सुवासित-समकित-जल से, मिथ्यात्व-महामल का मर्दन ॥
तीर्थनाथ चौबीस-जिनेश्वर ! शरण तुम्हारी हूँ आया ।
जन्मादि-रोग का हो अभाव, अब निर्मल-नीर चरण लाया ॥

चंदन

निःशेष कषायें अतः शान्त हों, शीतल हो शीतल कर हो ।
निर्द्वंद्व निराकुल ! व्याकुलता से, तपित-जनों को तपहर हो ॥
तीर्थनाथ चौबीस-जिनेश्वर! शरण तुम्हारी हूँ आया ।
दग्ध अरे! मैं भवाताप से, इसीलिए मलयज लाया ॥

अक्षत

अविकार अखंडित अविनाशी, अघहार अनाकुल रे! अक्षय ।
अनबाध अशोक अशंक अरे! अविचल अनहद हो और अभय ॥
तीर्थनाथ चौबीस-जिनेश्वर! शरण तुम्हारी हूँ आया ।
प्रभु ! अक्षय-पद की प्राप्ति-हेतु, अक्षत चरणों में ले आया ॥

पुष्प

अंतःस्तल महक रहा प्रभुवर ! चैतन्य-सुमन की सौरभ से ।
कंदर्प-छली से मुक्त विभो! गुण गाते गणधर गौरव से ॥
तीर्थनाथ चौबीस-जिनेश्वर! शरण तुम्हारी हूँ आया ।
रे ! पुष्पचाप-आताप नाश हो, पुष्प चरण में ले आया ॥

नैवेद्य

क्षुधा शमन को अक्षम रे ! व्यंजन सारे जगती-तल के ।
आनंद-अतींद्रिय अमृत-रस यह, भूख भगाता है पल में ॥
तीर्थनाथ चौबीस-जिनेश्वर! शरण तुम्हारी हूँ आया ।
स्वादिष्ट मनोहर इष्ट-मिष्ट ये, व्यंजन चरणों में लाया ॥

दीप

अज्ञान-तमिस्रा पराभूत रे ! प्रज्ञा-कण हैं क्षण-क्षण अक्षय ।
मोहान्ध-शमन का महामंत्र, निज ज्ञान-भानु का हो निश्चय ॥
तीर्थनाथ चौबीस-जिनेश्वर! शरण तुम्हारी हूँ आया ।
अर्पण प्रभुवर ! यह दीप-रत्न, कैवल्य-दिवाकर मन भाया ॥

धूप

चिद्-वर्तन से विपरीत-कर्म, जो ध्यान-अनल में ध्वस्त प्रभो!
प्रविमुक्त प्रदूषण-कानन से, चैतन्य-निलय में मस्त विभो!
तीर्थनाथ चौबीस-जिनेश्वर ! शरण तुम्हारी हूँ आया ।
प्रभू हों विनष्ट ये कर्म सभी, मैं धूप चरण में ले आया ॥

फल

आनंद-प्रपूरित अमृत-फल, निज-आत्म-वाटिका के मनहर ।
प्रतिपल परिणति में आस्वादन, से परम-तृप्त हो हे जिनवर !
तीर्थनाथ चौबीस-जिनेश्वर! शरण तुम्हारी हूँ आया ।
ध्रुव-अचल-अनुपम-गति पाने, मैं दिव्यतरु के फल लाया ॥

अर्घ्य

दर्श-ज्ञान-चारित्र-वीर्य-सुख, गुण-अनंत निज का वैभव ।
व्यय-उत्पादी-ध्रुव-सत्ता में, फेर नहीं कुछ भी संभव ॥
तीर्थनाथ चौबीस-जिनेश्वर! शरण तुम्हारी हूँ आया ।
मैं अनर्घ्य-वैभव-अभिलाषी, अर्घ्य चरण में ले आया ॥

जयमाला

दोहा:-

वंदूँ श्री चौबीस-जिन, मन-वच-तन से आज।
परिणति मेरी आप-सम, हो जावे जिनराज!

आदि अजित संभव अभिनंदन, सुमति पद्म सुपार्श्व प्रभो ।
चन्द्र पुष्प शीतल जिनेश अरु, श्रेयनाथ वासुपूज्य विभो ।।
विमल अनंत धर्म शांति जिन, कुंथू अरह मल्लि जिनराय ।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, महावीर को शीश नवाय ।।

दोहा:-

चौबीसों तीर्थेश ये, भरतक्षेत्र शुभ जान ।
अतिशय-महिमा के धनी, हुये पाँच-कल्याण ।।

छंद विधाता:-

प्रभू का गर्भ-कल्याणक, रे! बरसे रत्न अंबर से ।
ये शुभ-संदेश वसुधा पर, जगत् के जीव सब हरषे ।।
अहो! ये स्वप्न-सोलह जो, प्रभू की मात ने देखे ।
रे! रत्नों की पिटारी में, जगत् के नाथ आ बैठे ।।

जन्म है आज यह अंतिम, त्रिजग में हर्ष है भारी ।
इंद्र-आसन हुआ कम्पित, करो उत्सव की तैयारी ।।
किया अभिषेक पांडुक पर,सहस्र-लोचन सुदर्शन भी ।
लौटकर जब नगर आये, नृत्य-तांडव प्रदर्शन भी ।।

तत्त्व-चिन्तन अनुप्रेक्षा, किया वैराग्य का वर्धन ।
लौकान्तिक देव भी आए,किया संयम का अनुमोदन ।।
शिविका देव जो लाए, मनुज को था प्रथम-अवसर ।
रे! मुष्ठी पंच-लुंचन केश, को वो भी हुए तत्पर ।।

अहो! यह ज्ञान-कल्याणक, लगा समवसरण प्यारा ।
सदा हो लीन निज में ही, बना पर ज्ञेय जग सारा ।।
किया उपदेश तत्त्वों का, सभी का भाग्य था जागा ।
निजातम-लौ लगी जिसको, मिथ्यातम दूर था भागा ।।

हुआ निर्वाण प्रभुवर का, नहीं कुछ शेष संयोगी ।
तजा अब देह भी अंतिम, चले निज-देश को योगी ।।
अहो! अब द्रव्य-गुण जैसी, हुई पर्याय भी निर्मल ।
रहो यों काल अनंतानंत, प्रभू! ध्रुवधाम में निश्चल ।।

दोहा :-

तीर्थंकर जिनराज की, पूजा का परिणाम ।
जिन सम निज को जानकर, पहुचें शिवपुर धाम ।।

☆ ☆ ☆